विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पेज नं
01.	अपनी बात	04
02.	ह़लाल रिज़्क़ की फ़ज़ीलत	07
03.	इस्तिग़फ़ार व त़ौबा करना	13
04.	तक़वा इख़्तियार करना	21
05.	अल्लाह तआ़ला पर तवक्कल करना	27
06.	अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़बादत के लिये फ़ारिग़ होना	32
07.	ह़ज्ज और उ़मरा में मुताबअ़त करना	36
08.	सि़लारहमी करना	39
09.	अल्लाह तआ़ला की राह में ख़र्च करना	47
10.	शरई इ़ल्म के लिये वक़्फ़ (समर्पित) होने वालों पर ख़र्च करना	55
11.	कमज़ोरों के साथ एहसान करना	60
12.	अल्लाह क्की राह में हिजरत करना	63
13.	निकाह करना	69
14.	सारांश व तमाम मुस्लिमों से गुज़ारिश	74
15.	आदर्श मुस्लिम पब्लिकेशन : एक परिचय	76

चीज़ खाई थी।

* तो फिर हमारा क्या हाल होगा जो हर दिन जानते-बूझते हराम चीज़ें खाते हैं और कमाते हैं, जिन्हें अल्लाह ने हराम किया है?

* इसके बावजूद हम अल्लाह के आगे न तो शर्मिन्दा होते हैं और न ही उससे हिदायत माँगते हैं। लगातार नाफ़र्मानियाँ करते रहने और तौबा न करने पर अल्लाह तआला हमें जन्नत में क्यों दाख़िल करेगा?

याद रखिये!

शैतान हमारा खुला दुश्मन है। जब उसको हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और हज़रत हव्वा (अलैहिस्सलाम) का जन्नत में रहना अच्छा नहीं लगा और उसने साज़िश रचकर उन दोनों को जन्नत से बाहर निकलवा दिया; तो वो कब चाहेगा कि हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद, जो जन्नत से बाहर है, उसे जन्नत में जाने दे? शैतान हमें दो तरीक़ों से बहकाता है,

01. शैतान की पहली चाल : माल कमाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये और दुनियादारी छोड़कर सन्यासी बन जाना चाहिये।

यह सोच सहीह नहीं है। **जाइज़ मक़सद के लिये माल कमाना इबादत है।** नीचे बयान की गई हदीष में हमारे लिये वाज़ेह (स्पष्ट) नसीहत है।

हज़रत कअब बिन उजरा (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) के पास से एक आदमी गुज़रा जो मेहनत-मज़दूरी के लिये जा रहा था। उसकी भागदौड़ देखकर सहाबा ने कहा, 'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अगर इस आदमी की दिलचस्पी और भागदौड़ अल्लाह की राह में होती तो कितना अच्छा होता?'

आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'अगर वह अपने छोटे-छोटे बच्चों की परवरिश के लिये दौड़-धूप कर रहा है तो यह कोशिश भी अल्लाह की राह में शुमार की जाएगी। और अगर वह अपने बूढ़े माँ-बाप की परवरिश के लिये दौड़-धूप कर रहा है तो भी ये अल्लाह के लिये किया गया काम समझा जाएगा। और अगर वह अपने ज़ाती (निजि) कामों के लिये दौड़-धूप कर रहा है और उसका मक़सद यह है कि लोगों के सामने हाथ न फैलाना पड़े तो यह काम भी अल्लाह के लिये किया गया काम समझा जाएगा। लेकिन अगर उसकी कोशिश का मक़सद यह हो कि लोगों पर अपने माल व दौलत की बरतरी जताए और**

2.
तक़वा इख़्तियार करना

और जो कोई अल्लाह से डरता है वो उसके लिये (हर मुश्किल से) निकलने की राह बना देता है और उसको वहाँ से रोज़ी देता है जहाँ से उसको गुमान ही नहीं होता.

(सूरह त़लाक़ : 2-3)

'जो शख़्स इस बात को पसन्द करे कि उसकी उम्र मे इज़ाफ़ा हो, उसके रिज़्क़ में वुस्अत हो और उससे बुरी मौत दूर की जाए, वो अल्लाह तआला से डरे और सिलारहमी करे।' (अल मुस्नद, मज्मउ़ज़्ज़वाइद) मुहद्दिषीन ने इस हदीष़ की इस्नाद को स़हीह़ क़रार दिया है।

नबी करीम (ﷺ) ने इस हदीष़ शरीफ़ में इस बात की ख़बर दी है कि जिसमें दो ख़स़लतें; एक अल्लाह तआला का तक़वा और दूसरा सिलारहमी; पाई जाए उसको तीन फ़ायदे ह़ास़िल होते हैं और उन तीन में से एक फ़ायदा रिज़्क़ की कुशादगी (ज़्यादती) और वुस्अत (फैलाव) है।

05. इमाम बुख़ारी (रह.) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़र्माया, **'जो शख़्स अपने रब तआला से डर जाए और सिलारहमी करे, उसकी उम्र में इज़ाफ़ा किया जाता है, उसके माल को बढ़ाया जाता है और उसके ख़ानदान वाले उससे मुहब्बत करते हैं।'** (अल अदबुल मुफ़रद)

06. माल व दौलत की बढ़ोतरी और फ़क़्र व इफ़्लास (ग़रीबी) के ख़ात्मे के लिये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने सिलारहमी में इस क़दर तास़ीर रखी है कि नाफ़र्मान और बुरे लोग भी अगर सिलारहमी करे तो अल्लाह तआला उसकी वजह से दुनिया में उनके माल दौलत और ता'दाद में इज़ाफ़ा कर देता है और उस पर नीचे लिखी ह़दीष़ इस पर दलील है।

इमाम इब्ने ह़िब्बान ह़ज़रत अबू बकर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की कि आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'तमाम नेकियों में सबसे ज़्यादा जल्दी ष़वाब सिलारहमी का मिलता है। यहाँ तक कि जब किसी बुरे और नाफ़र्मान घराने के लोग सिलारहमी करते हैं तो उनके मालों में बढ़ोतरी और ता'दाद में इज़ाफ़ा होता है, किसी भी सिलारहमी करने वाले कुनबे के लोग मुह़ताज नहीं होते।'**

(अल इहसान फ़ी तक़रीब स़हीह़ इब्ने हिब्बान)

शैख शुऐब अल अर्नाउत ने मुख़्तलिफ़ गवाहियों के आधार पर इस ह़दीष़ को स़हीह़ क़रार दिया है।

सिलारहमी किस चीज़ के साथ की जाए?

कुछ लोग समझते हैं कि सिलारहमी सिर्फ़ माल के ज़रिये से होती है। ये सिलारहमी का अधूरा और नाक़िस़ तस़व्वुर है। सिलारहमी का दायरा इससे कहीं ज़्यादा वसीअ